मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- अटाली दंगे का सबक अपराधी को अपराधी मानो न कि हिन्दू मुसलमान — 3
- कब तक उछाला जाएगा राम मंदिर का मुद्दा — 5
- जयललिता प्रकरण:19 साल बाद परिणाम शून्य — 5
- पानीपत थर्मल प्लांट का पास-परिवेश — 6
- आप ही बतायें कैसे न्याय दिलायें — 6
- लूटना, झूठ बोलना कोई नेताओं से सीखे सफ़ेद झूठ बोलना संघियों से — 8

वर्ष 28 अंक 16 फरीदाबाद, मंगलवार, 16-30 जून 2015 फोन : - 9999595632 2 ₹

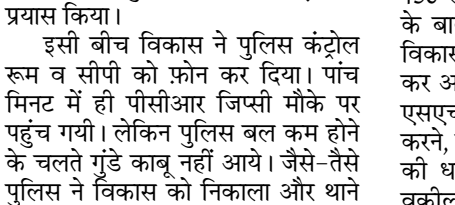


यक्ष : अन्योक्ति अलंकार का राजनीतिक परिभाषा दो और उदाहरण के साथ समझाओ।
युधिष्ठिर : परिभाषा तो वही साहित्य वाली है और हेतु भी वही..... शिल्प में सौंदर्य.वृद्धि.....
उदाहरण : जब पाकिस्तान के शिविरों में कम्पन के लिए म्यंमार के शिविरों को हिलाया जाए .....
तब इसे राजनीतिक अन्योक्ति कहा जाता है .....
– पंकज मिश्रा

# थाने पर गुंडों का हमला, पुलिस पिटी

## मंत्री के दबाव में एसएचओ लाइन हाजिर, डीसीपी का तबादला

**मज़दूर मोर्चा, फ़रीदाबाद**

**राजनीतिक संरक्षण के चलते अब गुंडों के हौंसले इतने बुलंद हो गये हैं कि वे पुलिस को पुलिस और थाने को थाना समझने को भी तैयार नहीं। वे थाने में घुस कर किसी को भी मारने पीटने का हक समझने लगे हैं।**

मामला बुधबार शाम का है। विकास मलिक ओल्ड फ़रीदाबाद पूर्ण एन्क्लेव स्थित अपनी वर्कशॉप के बाहर जूस की दुकान पर आया था कि पहले से घात लगाये कुछ गुंडों ने उस पर हमला कर दिया। वह बचाव में भागने लगा तो गुंडों ने, पहले से तैयार खड़ी गांड़ी में उसे डालने का प्रयास किया। सैंकड़ों लोग़ों की भीड़ जमा हो गयी। ऐसे में जैसे-तैसे विकास अपनी वर्कशॉप में घुस गया और शटर अन्दर से बन्द कर लिया। डंडों आदि से लैस 10-15 गुंडों ने शटर को तोड़ने का प्रयास किया।

इसी बीच विकास ने पुलिस कंट्रोल रूम व सीपी को फ़ोन कर दिया। पांच मिनट में ही पीसीआर जिप्सी मौके पर पहुंच गयी। लेकिन पुलिस बल कम होने के चलते गुंडे काबू नहीं आये। जैसे-तैसे पुलिस ने विकास को निकाला और थाने ले गयी। इससे तिलमिलाये गुंडों ने फ़ोन करके अपने 100-150 साथियों को बुला लिया। वे भी जैसे तैयार ही बैठे थे। विकास के एकदम पीछे-पीछे वे भी थाने में घुस आये और विकास को कब्ज़े में लेने का प्रयास किया। जिन पुलिस वालों ने उसे बचाने का प्रयास किया, उन्हें गुंडों ने धक्का-मुक्की करके खदेड़ दिया। शोर सुनकर कुछ ही मिनटों में एसएचओ भारतेंदु भी मौके पर पहुंच गये, जो उस समय बाथरूम में थे। गुंडों ने एसएचओ से भी धक्का-मुक्की करी। सैंकड़ों की संख्या में घुस आये गुंडों के सामने थाने में मौजूद थोड़े से पुलिसकर्मी बहुत ही असहाय स्थित में धक्का-मुक्की का शिकार होते रहे।

उच्चाधिकारियों को सूचना मिलने पर तुरंत 40-50 पुलिसकर्मी इधर-उधर से मौके पर भेजे गये। उन्होंने लाठीचार्ज करके भीड़ को बाहर खदेड़ा और भीड़ का नेतृत्व कर रहे 11 लोग़ों को हिरासत में लेकर 150 लोग़ों के विरुद्ध मन्त्री के मना करने के बावजूद दो मुकदमे दर्ज किये। एक विकास मलिक की शिकायत पर मारपीट कर अपहरण के प्रयास का व दूसरा खुद एसएचओ की तरफ़ से पुलिस पर हमला करने, उनके काम में रूकावट डालने आदि की धाराओं में। हमलावरों में एक एक वकील साहब भी थे, जिसे छोड़ दिया गया था। इनको लेकर ज़िला बार एसोसिएशन ने वीरवार यानी 11 जून को अनिश्चितकालीन हड़ताल घोषित कर दी। लेकिन शुक्रवार को वकीलों के दूसरे धड़े ने इस हड़ताल को गैरक़ानूनी एवं अवांछित बताते हुए इसका विरोध किया और शुक्रवार को हड़ताल तोड़ते हुए अदालतों में पेश हो गये। हड़ताल तोड़ने वाले धड़े का कहना है कि वकीलों का काम अदालतों में वकालत करना होता है न कि गलियों व थानों में नागरिकों व पुलिस से लड़ने-झगड़ने का।

**डीसीपी सेन्ट्रल विजय प्रताप के तबादला आदेश हरियाणा सरकार ने जारी कर दिये हैं। उन्हें डीसीपी अम्बाला तैनात किया गया। इस तबादले से स्वत: सिद्ध हो जाता है कि गुंडा गिरोह की पुश्त-पनाही में खुद कृष्णपाल लगे हैं। अब उनके निशाने पर सीपी हैं। यदि हरियाणा सरकार गुंडागर्दी को इसी तरह प्रोत्साहित करती रही तो शीघ्र ही इस मामले में वह यू पी की अखिलेश सरकार से भी आगे निकल जायेंगे और आपनी पार्टी का बंटाधार कर लेगी।**

सभी हमलावरों की पहचान तो अभी नहीं हो पाई है लेकिन नेतृत्वकारी मेवला महाराजपुर गांव से थे और चिल्ला-चिल्ला कर अपने आप को स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मन्त्री कृष्णपाल गुर्जर के भाई-भतीजे बता रहे थे। लेकिन कृष्णपाल ने इस रिश्तेदारी से साफ़ मना किया है। यदि मन्त्री महोदय की बात सही है तो उन्होंने रात ढाई बजे अपने स्थानीय आवास पर सीपी सहित अन्य अफ़सरों की मीटिंग क्यों बुलाई ? करने देते पुलिस को अपने स्तर पर कार्यवाही। वैसे यह कटु सत्य भी किसी से छिपा नहीं है कि राजनीतिक संरक्षण के बिना गुंडागर्दी और वह भी इस स्तर की संभव ही नहीं। इसी के चलते तमाम आरोपियों की तुरन्त जमानतें भी हो गयी जबकि सामान्यतया पुलिस द्वारा लगाई गयी धाराओं में इतनी जल्दी जमानत मिलती नहीं। यद्यपि गुंडागर्दी के समर्थकों के दबाव में एस एच ओ को तुरंत प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया गया है। लेकिन इनकी मांग है कि मौके पर पहुंचे डीसीपी सेंट्रल विजय प्रताप को निलम्बित तथा सीपी का तबादला किया जाय। जाहिर है इससे गुंडा गिरोह को खुल कर गुंडागर्दी करने का और भी पक्का अधिकार मिल जायेगा हौंसला तो उनके पास है ही।

### 6 अप्रैल को भी इस गिरोह ने ऐसी ही गुंडागर्दी की थी

इस पूरे मामले की महत्वपूर्ण कड़ी 26 वर्षीय विकास मलिक से सम्पर्क किया गया तो उन्होंने बताया कि सेक्टर 21 डी के मकान नं. 1237 में 60 वर्षीय शर्मा जी रहते हैं। विकास मलिक का उनके यहां आना-जाना है। दिनांक 6 अप्रैल को जब विकास उनके घर पहुंचा तो भीड़ लगी देख कर हैरान हो गया। पूछने पर पता लगा कि मेवला महाराजपुर के इसी गुंडा गिरोह ने उनके घर पर हमला कर रखा था। विकास ने बीच-बचाव कराने एवं दोनों पक्षों की बात समझने का प्रयास किया तो गिरोह ने विकास को ही पेल दिया। वह अपनी स्कोर्पियो छोड़ कर पैदल ही पुलिस चौकी की ओर भागा। पीछे-पीछे गिरोह भी चौकी में पहुंच गया। चौकी इन्चार्य नरपत सिंह को धक्का-मुक्की करके यह कहते हुए एक तरफ़ कर दिया कि वे कृष्णपाल के भाई भतीजे हैं, तू बीच में मत पड़, हमें इस (विकास) से निपट लेने दे। अकेले विकास ने पुलिस चौकी में ही उनसे मुकाबला करते हुए काफ़ी मार खाई। जाते वक्त गुंडा गिरोह उसे फ़िर देख लेने की धमकी देकर चला गया और तब से ही ये लोग मलिक पर नज़र रखे हुए थे।

6 अप्रैल की इस वारदात में खुद शर्मा जी बेहोश हो गये थे जो एसियन अस्पताल की आईसीयू में एक दिन रहना पड़ा, उनकी पत्नी की टांग अभी तक ठीक नहीं हुई है, उनके बेटे की आंख में गंभीर चोट का अभी उपचार चल रहा है, विकास का एक हाथ टुट गया था। विकास की स्कोर्पियो तथा शर्मा जी की मर्सडीज तथा होंडा सिटी कारों को बुरी तरह तहस-नहस कर गये थे। शर्मा जी द्वारा दरखास्त दिये जाने के बावजूद भी पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। उसी रात खुद कृष्णपाल गुर्जर शर्मा जी के घर आये माफ़ी मांगी तथा भविष्य में फ़िर किसी तरह की वारदात न होने की गारंटी देकर शर्मा जी को पुलिस कार्यवाही न करने के लिये राज़ी कर लिया।

**शेष पेज दो पर**

## ख़बर दार

### सैन्यवाद+मर्दवाद=राष्ट्रवाद-मनोहर पार्रिकर

**रक्षामंत्री मनोहर पार्रिकर ने स्त्रियों को सैन्यबलों में लड़ाका भूमिका में न लेने के लिये एक ठेठ मर्दवादी तर्क दिया है कि दुश्मन के हाथों पड़ने पर वे अपमानित होंगी। लक्ष्मीबाई, फूलनदेवी और रजिया सुल्तान के देश में यह किसी कायर का तर्क ही हो सकता है। पार्रिकर से कोई पूछे कि अमेरिका, यूरोप, इज़रायल के सैन्य बलों में स्त्रियां कैसे लड़ाका भूमिका में है? स्वयं देशी माओवादी दलों में भी। फ़िर क्या पुरुष सैनिकों को पकड़े जाने पर दुश्मन के हाथों अपमान का सामना नहीं करना पड़ता? मोदी के रक्षामंत्री के नजरिये को समझने के लिये उनसे एक काल्पनिक साक्षात्कार।**

**म.मो.**-आपके और पाकिस्तानी हुकमरानों के बीच सैन्यवादी भड़ास निकालने की कवायद चल रही है, उस पर प्रकाश डालें।

**पार्रिकर**-पाकिस्तान के मुशर्रफ ने हमारी मर्दानगी को यह कहकर ललकारा कि पाकिस्तानियों ने चूड़ियां नहीं पहन रखी हैं। हम भी उन्हें जता रहे हैं कि चूड़ियां हमने भी नहीं पहन रखी।

**म.मो.**-भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में लगभग हर स्त्री चूड़ी पहनती है। तो क्या आप लोग अपनी स्त्रियों को स्वयं ही कायर ठहरा रहे हैं?

**पार्रिकर**-यह तो हमारी पुरानी संस्कृति है। मर्द हथियार अपने हाथ में रखते हैं और चूड़ियों से स्त्रियों के हाथ बांध देते हैं।

**म.मो.**-चूड़ियों से दिक्कत क्या है? क्या चूड़ियां पहन कर हथियार नहीं चलाये जा सकते? आपने कभी चला कर देखा है? कोई दिक्कत आई?

**पार्रिकर**-मैंने तो कभी चलाया नहीं। मोदी जी से और पूछ लेता हूं। वैसे बात तो तुम्हारी ठीक है। चूड़ियां कलाई में होती हैं और हथियार चलाने में कलाई का इस्तेमाल तो होता नहीं। फ़िर मर्द भी तो कलाई में कड़ा, चैन, घड़ी आदि पहनते ही हैं।

**म.मो.**-यह कह कर कि हमने चूड़ियां नहीं पहन रखीं, क्या आप अपनी स्त्रियों को ही अपमानित नहीं कर रहे? कल को आप यह भी कहोगे कि हमने सिंदूर नहीं लगा रखा या हमने गर्भ नहीं धारण कर रखा। इस तरह आप पत्नी और माताओं की भी बेइज्जती करोगे?

***पार्रिकर***-भई बात तो तुम्हारी कुछ-कुछ समझ में आने लगी है। इसे मैं कैबिनेट मीटिंग में उठाऊंगा।

**म.मो.**-आपके प्रधानमंत्री मोदी ने तो बंगला देश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के भी स्त्री होने की खिल्ली उड़ा दी। झट से अपनी मर्दानी सराहना का प्रमाणपत्र पकड़ा दिया कि शेष हसीना ने स्त्री होते हुए भी आतंकियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने की हिम्मत दिखाई है।

**पार्रिकर**-मोदी जी की छाती 56 इन्च की है। यह सिद्ध करने के लिये कभी-कभी ऐसी बातें उन्हें बोलनी पड़ती हैं, खासकर विदेशी दौरों में तो कुछ ज़्यादा ही। क्या आपको नहीं पता कि उन्होंने बेटी बचाओ मुहिम चला रखी है। इससे अधिक उनके स्त्री समर्थक होने का और क्या सबूत चाहिये। अब वे अपनी गद्दी तो सुषमा स्वराज को देने से रहे।

**म.मो.**-क्या हम आपको एक सुझाव दे सकते हैं?

**पार्रिकर**-हां-हां क्यों नहीं।

**म.मो.**-भारत के प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और सेनाध्यक्ष को हाथों में चूड़ियां पहन कर सीमा पर जवानों को सम्बोधित करना चाहिये। इसने मनोवैज्ञानिक रूप से सारे देश की स्त्रियों को मजबूती मिलेगी।

**पार्रिकर**-भई यह सुझाव तो प्रधानमंत्री दफ़्तर की वेबसाइट पर ही डाल देना। मेरी कुर्सी छिनवाओगे क्या। वैसे भी हमारी सरकार की हालत उस नई-नवेली दुल्हन जैसी है जो काम तो कुछ करती नहीं पर चूड़ियां बहुत खनखनाती हैं।

### भ्रष्टाचार में उग्रवाद: कष्ट में राष्ट्रवाद

**यह** स्वाभाविक था कि मणिपुर में उग्रवादियों के निशाने पर आई भारतीय सेना की ओर से एक मुंहतोड़ जवाबी कार्यवाही होती। हालांकि 56 इंच के राष्ट्रवादी सीने को शेखचिल्ली के अन्दाज़ में कुछ इस तरह पीटा गया कि तुरंत ही मोदी सरकार की ओर से सफ़ाइयां दी जाने लगीं। बहरहाल एक सैन्यवादी सरकार और उसके मर्दवादी रक्षामंत्री से देश की जनता को सावधान रहने का सबक तो मिल ही गया।

तो भी मणिपुर/म्यांमां में हुए सैनिक कार्यवाही के संदर्भ में चार नीतिगत सवाल बनते ही हैं-

**1.** म्यांमां सीमा पर उग्रवादी समूहों के जमावड़े का सभी को पता है जहां से वे अपनी खूनी गतिविधियां चलाते आ रहे हैं। यदि उन्होंने सेना का इतना बड़ा नुक्सान न किया होता तो क्या उनके विरुद्ध सेना का यह चकाचौंध भरा आप्रेशन होता?

**2. केन्द्र** सरकार की उत्तर पूर्व के राज्यों को विकास के लिये भेजी जाने वाली एक बड़ी धन राशी तमाम उग्रवादी संगठनों को पहुंच जाती है। इसे कब रोका जायेगा?

**3.** विशेषकर मणिपुर, नागालैंड और मेघालय में ये उग्रवादी जनता से खुलेआम उगाही करते हैं। यहां तक कि सरकारी कर्मचारियों से भी। यह कब रोका जा सकेगा?

**4.** त्रिपुरा सरकार ने राज्य से राक्षसी क़ानून अफ़स्पा को हटा दिया है। यह संभव इसलिये हो सका क्योंकि वहां एक जनवादी सरकार है। उत्तरपूर्व के शेष राज्यों में कांग्रेसी और भाजपाई सरकारें चली आ रही हैं। इनमें अफ़स्पा की आड़ में सैन्यबलों द्वारा जनता का निरंकुश दमन होता है, जिससे उग्रवादियों को शह मिलती है। इन राज्यों में अफ़स्पा कब समाप्त होगा?

राष्ट्रवाद को जब-जब कष्ट होता है, तब-तब वह उग्रवाद से खतरे की ढपली बजाना शुरू कर देता है। हालांकि सच्चाई यह है कि सारा उग्रवाद इसी अंध-राष्ट्रवाद के दम पर चल रहा है।